अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन	I - V
कृतज्ञता ज्ञापन	VI - VII
अनुक्रमणिका	VIII - XII

प्रथम अध्याय – चित्रा मुद्गल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व **1–20**

1.1 चित्रा मुद्गल का जीवन परिचय

1.1.1 जन्म एवं परिवार

1.1.2 चित्रा का शैक्षिक जीवन

1.1.3 चित्रा का वैवाहिक जीवन

1.1.4 चित्रा का लेखकीय जीवन

1.2 चित्रा के व्यक्तित्व के विविध पहलू

1.2.1 नारी चेतना की पक्षधर

1.2.2 सुधारवादी दृष्टिकोण

1.2.3 मानवतावादी व्यक्तिमत्व

1.2.4 संघर्षशील तथा आत्माभिमानी

1.2.5 निरहंकारी स्त्री

1.2.6 हँसमुख व्यक्तित्व

1.2.7 बहुभाषा में रूचि

1.2.8 रूचियाँ

1.2.9 सामंती विचारधारा की विरोधक

1.2.10 आदर्श पत्नी तथा माता

1.3 चित्रा मुद्गल का कृतित्व

1.3.1 एक जमीन अपनी

1.3.1 आवां

1.3.3 गलिगड्डु

1.4 कहानी संग्रह

1.4.1 बाल उपन्यास

1.4.2 बाल कहानी संग्रह

1.4.3 संपादित कहानी संग्रह
1.4.4 पुरस्कृत कहानियाँ
1.4.5 लेख
1.4.6 कविता
1.4.7 अनुवाद
1.5 उपलब्धियाँ
1.6 पाठ्यक्रमों में रचनाएँ
1.7 पुरस्कार एवं सम्मान
निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक अध्ययन 21 – 52
2.1 कथावस्तु एवं महत्त्व
2.2 'ग्यारह लंबी कहानियाँ' का परिचय
2.3 'चर्चित कहानियाँ' का परिचय
निष्कर्ष
तृतीय अध्याय – विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन 53 – 78
3.1 पारिवारिक समस्या
3.1.1 परिजनों द्वारा शोषण की समस्या
3.1.2 परिजनों की व्यथा की समस्या
3.1.3 द्विभार्या समस्या
3.1.4 परिवार नियोजन की समस्या
3.1.5 शुष्क वैवाहिक जीवन की समस्या
3.1.6 अहम् के कारण पारिवारिक टूटन की समस्या
3.1.7 पिता–पुत्र के रिश्तों में दरारें की समस्या
3.1.8 पति–पत्नी के संबंधों में रिक्तता की समस्या
3.1.9 दांपत्य जीवन में बिखराव की समस्या
3.2 सामाजिक समस्या
3.2.1 सामाजिक असुरक्षा की समस्या

3.2.2 भ्रष्टाचार की समस्या
3.2.3 त्रिशंकु की समस्या
3.2.4 बेरोजगार युवा की समस्या
3.2.5 बेरोजगार युवावर्ग तथा मकान की समस्या
3.2.6 झुग्गी-झोपड़िवालों की अभावग्रस्त जिंदगी की समस्या
3.2.7 हड़ताल की समस्या
3.2.8 रूढ़िवाद की समस्या
3.3 आर्थिक समस्या
3.3.1 भूख की भयावह समस्या
3.3.2 प्राणियों की हत्या की समस्या
3.3.3 जायदाद की हवस की समस्या
3.3.4 गरीबी की समस्या
3.3.5 द्वेष की समस्या
3.4 नारी समस्या
3.4.1 प्रौढ़ावस्था के कारण दांपत्य जीवन में बिखराव
3.4.2 चेतित नारी की समस्या
3.4.3 वैधव्य की समस्या
3.4.4 नौकरीपेशा अस्तित्ववादी नारी की समस्या
3.4.5 परित्यक्त्या नारी की समस्या
3.5 राजनीतिक समस्या
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – विवेच्य कहानियों के कथ्य का अनुशीलन **79 – 98**
4.1 कथ्य
4.2 राजनेताओं द्वारा गरिबों का शोषण
4.3 नैतिक मूल्यों में ह्रास
4.4 आर्थिक विषमता
4.5 नारी अस्मिता तथा परिजनों द्वारा शोषण
4.6 स्वार्थांधता

4.7 सामाजिक असुरक्षा
4.8 पाश्चात्य अंधानुकरण
4.9 बेरोजगारी की समस्या
4.10 परिवार नियोजन
4.11 द्वेष की समस्या
4.12 वैधव्य की पीड़ा
4.13 पिता-पुत्र में असंघटन
4.14 पति-पत्नी के संबंधों में रिक्तता
4.15 नारी की अस्तित्वपरक चेतना
4.16 बुआ-भतीजी के बदलते संबंध
4.17 सामान्य आदमी की दुर्दशा
निष्कर्ष

पंचम अध्याय – विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन **99–152**

5.1 शिल्प
5.1.1 शिल्प का स्वरूप
5.1.2 शिल्प का महत्त्व
5.1.3 विवेच्य कहानियों में शिल्पविधि
5.2 विवेच्य कहानियों में कथावस्तु का मूल्यांकन
5.2.1 विवेच्य कहानियों में कथावस्तु का महत्त्व
5.2.2 आलोच्य कहानियों की कथावस्तु
5.3 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
5.3.1 चरित्र चित्रण का स्वरूप
5.3.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व
5.3.3 आलोच्य कहानी संग्रहों के चरित्र-चित्रण
5.4 कथोपकथन
5.4.1 कथोपकथन के भेद
5.4.2 कथोपकथन के गुण
5.4.3 कहानी में कथोपकथन का महत्त्व
5.4.4 चरित्र चित्रण में सहायक कथोपकथन

5.5 देश काल तथा वातावरण का मूल्यांकन
5.5.1 परिवेश के गुण
5.5.2 परिवेश के भेद
5.5.3 परिवेश का महत्त्व
5.5.4 आलोच्य कहानियों के परिवेश का मूल्यांकन
5.6 भाषा
5.6.1 भाषा के गुण
5.6.2 कहानी में भाषा के विविध रूप
5.6.3 भाषा का महत्त्व
5.6.4 विवेच्य कहानियों में भाषा मूल्यांकन
5.7 शैली
5.7.1 शैली का स्वरूप
5.7.2 शैली के गुण
5.7.3 शैली के भेद
5.7.4 वर्णनात्मक शैली
5.7.5 विश्लेषणात्मक शैली
5.7.6 पूर्वदीप्ति शैली
5.7.7 पत्रात्मक शैली
5.7.8 आत्मकथात्मक शैली
5.8 उद्देश्य
5.9 शीर्षक
5.9.1 शीर्षक का महत्त्व
5.9.2 आलोच्य कहानियों में शीर्षक का मूल्यांकन
निष्कर्ष

उपसंहार **153–158**

संदर्भ ग्रंथ–सूची **159–162**

परिशिष्ट **163–170**

□□□□

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR